अध्याय 18

परमेश्वर का अब्राहम से भेंट करना

इस अध्याय के पूर्व, यहोवा अब्राहम को दिखाई दिए। इस विख्यात मुलाकात के दौरान परमेश्वर ने कनान देश को वायदे का देश ठहराया (17:8), खतना की प्रक्रिया की व्याख्या की (17:9-14), और अब्राहम और सारा के नामों को बदल दिया (17:5, 15)। उन्होंने बताया की सारा, जो भविष्य में राज्यों की माता होंगी, वह एक पुत्र भी जानेगी, जिसका नाम इसहाक होगा (17:16, 19); और उसने इश्माएल को भी बारह शासकों का पिता और एक महान राज्य बनाने का भी वायदा दिया (17:20)। इसके पश्चात, वह अचानक ही गायब हो गए (17:22)। 18 अध्याय में परमेश्वर अब्राहम को एक बार फिर मिलते हैं।

अब्राहम द्वारा तीन स्वर्गीय अतिथियों का सत्कार (18:1-8)

[1]अब्राहम मम्रे के बांज वृक्षों के बीच कड़ी धूप के समय तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था, तब यहोवा ने उसे दर्शन दिया: [2]और उसने आँख उठा कर दृष्टि की तो क्या देखा, कि तीन पुरुष उसके सामने खड़े हैं। जब उसने उन्हें देखा तब वह उन से भेंट करने के लिये तम्बू के द्वार से दौड़ा, और भूमि पर गिरकर दण्डवत की और कहने लगा, [3]"हे प्रभु, यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं विनती करता हूँ, कि अपने दास के पास से चले न जाना। [4]मैं थोड़ा सा जल लाता हूँ, और आप अपने पाँव धोकर इस वृक्ष के नीचे विश्राम करें। [5]फिर मैं एक टुकड़ा रोटी ले आऊँ, और उससे आप अपने जीव को तृप्त करें, तब उसके पश्चात आगे बढें, क्योंकि आप अपने दास के पास इसी लिये पधारे हैं"। उन्होंने कहा, "जैसा तू कहता है वैसा ही कर"। [6]तब अब्राहम तुरंत तम्बू में सारा के पास गया और कहा, तीन सआ मैदा जल्दी से गूँध, और फुलके बना। [7]फिर अब्राहम गाय बैल के झुण्ड में दौड़ा, और एक कोमल और अच्छा बछड़ा ले कर अपने सेवक को दिया, और उसने जल्दी से उसे पकाया। [8]तब उसने दूध और दही और बछडे का मांस, जो उसने पकवाया था, लेकर उनके आगे परोस दिया; और आप वृक्ष के तले उनके पास खड़ा रहा, और वे खाने लगे।

आयत 1. वह **परमेश्वर** (יהוה, *यहवह)* या "यहोवा" थे, जो दोबारा आए थे। इस बार वह तीन स्वर्गीय अतिथियों में से एक बनकर आए, जिन्हें देख कर लगता था की वह मनुष्य हैं। इसमें कोई शक नहीं है की कहानी के आरंभ में

अब्राहम इस समूह के प्रवक्ता को पहचान न सका (18:10, 13, 14, 17, 20, 25-27, 30, 32, 33)।

वृद्ध कुलपति अपने **तम्बू के द्वार पर बैठा हुआ था**। घुमंतू तम्बुओं में एक लटकती हुई वस्तु होती थी, जो सुबह के समय उठा दी जाए तो हवा तम्बू के आर-पार होती थी। तम्बू के द्वार पर बैठ कर अब्राहम उसकी छाया और मंद हवा का लुत्फ भी उठा रहा होगा।[1] इसके अतिरिक्त, उसका तम्बू **मम्रे के बांज वृक्षों** के बीच में गड़ा हुआ था (13:18; 14:13)। वहां वह दोपहर की चमकती हुई धूप से अपनी आँखों को बचाकर आराम कर रहा था।

आयत 2. अचानक, जब अब्राहम ने अपनी **आँखें ऊपर उठाई**, उसने **तीन पुरुषों को ... अपने सामने खड़े देखा**। जब **उसने उन्हें देखा**, वह उनसे भेंट करने के लिए **तम्बू के द्वार से दौड़ा**, और स्वयं को भूमि तक **झुका कर उनका अभिवादन किया**। जिस इब्री शब्द के लिए यहाँ "झुका," חָוָה *(चवह)* का प्रयोग किया गया है, सामान्य रूप से पुराने नियम में उसका संदर्भ परमेश्वर की आराधना (या मूर्तियों) से था (24:26; निर्गमन 20:5)। तथापि, कुछ मामलों में, जैसे अब्राहम की में, इसका अर्थ, "साष्टांग प्रणाम," भी लिया जा सकता है, जो "आत्म अपमान की एक आम विधि थी, जो अपने रिश्तेदारों, अजनबियों, वरिष्ठ, और ख़ास कर राजकीय जनों के समक्ष की जाती थी।"[2] मेज़बान के रूप में, अब्राहम ने सम्मान और आदर के साथ उन अजनबियों का अभिवादन किया, बिना यह जाने की वह अथिति स्वर्गीय प्राणी थे।

आयत 3. अब्राहम का कार्य, प्राचीन पूर्वी पास के सत्कार का एक उदाहरण है, खासकर उन लोगों का जो समाज के किनारों पर रहते थे और उनके पास कम अवसर होते थे की वह अतिथियों के साथ जाए या उनका सत्कार करें। इसके अतिरिक्त, उस संस्कृति में, अपने अतिथियों की ज़रूरतों को पूरा करने और उनकी सुरक्षा के लिए, जब तक वह उसके साथ रहें, मेज़बान बाध्य था। इसलिए, कुलपति ने समूह के सरदार को, "**मेरे प्रभु**," कह-कर संबोधित किया, जो इस संदर्भ में एक विनम्र अभिवादन की तरह है जैसे की "महोदय।"[3] उसने उनसे विनती करते हुए कहा, **"यदि मुझ पर तेरी अनुग्रह की दृष्टि है तो मैं विनती करता हूँ कि अपने दास के पास से चले न जाना।"**

आयतें 4, 5. फिर उसने उन्हें, उन सब वस्तुओं का प्रस्ताव दिया जिसे गरम और थके हुए यात्री ज़रूर सराहते: **पीने** और [अपने] **पाँव धोने** के लिए पानी (देखें 19:2; 24:32; 43:24; न्यायियों 19:21; लुका 7:44)। उसने उन्हें वृक्ष की छाया में विश्राम करने के लिए आमंत्रित किया (देखें 18:1), और फिर वह उनके लिए **रोटी का एक टुकड़ा** लेके आया ("रोटी का एक निवाला"; NKJV)। यह समझाने का तरीका था, कि अब्राहम अपने अतिथियों के लिए किस प्रकार के भोज की तैयारी अपने मन में कर रहा था। इरादा यह था की अतिथियों को बिना किसी परेशानी के आसानी से रखे और उन्हें यह विश्वास दिलाना था की वह स्वयं को उस पर थोप नहीं रहे थे, अन्यथा वह उसका प्रस्ताव ठुकरा देते।

जब अतिथियों ने यह सुना, तब उन्होंने यह कहकर उतर दिया, **"जैसा तू करता है, वैसा ही कर।"**

आयत 6. अब्राहम की बड़ी हुई उम्र और दिन की गर्मी के बावजूद, वह चाहता था की उसके अतिथि का सत्कार पूर्ण रूप से हो और उन्हें जिस भी वस्तु की आवश्यकता है वह उन्हें दी जाए। **वह तुरंत तम्बू में सारा के पास गया** और उसे **तीन माप** (सआ; NIV) मैदे से, **फुलके बनाने** का निर्देश दिया। क्योंकि एक सआ करीबन दो गैलन (या आठ लीटर)[4] जितना था, तीन सआ मैदे से भारी मात्रा में रोटी बन सकती थी - इतनी जितनी अब्राहम, सारा और तीनों अतिथियों के खाने की तुलना में से कहीं अधिक। यद्यपि इस कहानी में और किसी के बारे में बताया नहीं गया है, हमें यह याद रखना चाहिए की अब्राहम का घराना काफ़ी विशाल था (14:14)। भले ही अतिथियों के साथ और किसी ने खाना न खाया, किन्तु निश्चय ही कुछ भी बेकार नहीं गया होगा। मैदा अच्छी गुणवता का था; जिसे अच्छी तरह पीसा और गेहूँ से बनाया गया था। अन्यत्र यह सबसे सस्ते जौ के विपरीत भी खड़ा होता है (2 राजा 7:1, 16)। विधि के अनुसार, "मैदा" अकसर बलिदान में परमेश्वर द्वारा अपेक्षित थी (निर्गमन 29:2, 40; लैव्य. 2:1-7; 5:11; 6:15, 20)।

आयतें 7, 8. एक मेमना या बकरा पर्याप्त होता (देखें 2 शमूएल 12:4; लूका 15:27-30), परंतु अपने झुण्ड में से एक **चुना हुआ बछड़ा** मारना उन तीन अजनबियों के लिए उदारता होगा, जो एक राजा को शोभा भी देता है। जब वह उन्हें यह भोजन करा रहा था, तब शायद अब्राहम परमेश्वर द्वारा दी गयी बुलाहट "तू आशीष का मूल होगा" (12:2) को स्मरण कर रहा था, क्योंकि उसने अधिक प्रयास करके उनके लिए सबसे उत्तम भोजन की व्यवस्था की। जब उसके **दास** मांस पका चुके, अब्राहम ने **दही और दूध और उस मांस को लिए** और उन तीन अजनबियों को परोसा (देखें व्यव. 32:14; न्यायियों 5:25; 6:18, 19)। और वह उस वृक्ष के नीचे खड़ा रहा **जहाँ वे भोजन कर रहे थे।**

सारा एक अविश्वासी स्वामिनी (18:9-15)

[9]उन्होंने उससे पूछा, तेरी पत्नी सारा कहां है? उसने कहा, वह तो तम्बू में है। [10]उसने कहा मैं वसन्त ऋतु में निश्चय तेरे पास फिर आऊंगा; और तब तेरी पत्नी सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा। और सारा तम्बू के द्वार पर जो अब्राहम के पीछे था सुन रही थी। [11]अब्राहम और सारा दोनों बहुत बूढ़े थे; और सारा का स्त्रीधर्म बन्द हो गया था [12]सो सारा मन में हंस कर कहने लगी, मैं तो बूढ़ी हूं, और मेरा पति भी बूढ़ा है, तो क्या मुझे यह सुख होगा? [13]तब यहोवा ने अब्राहम से कहा, सारा यह कहकर क्यों हंसी, कि क्या मेरे, जो ऐसी बुढ़िया हो गई हूं, सचमुच एक पुत्र उत्पन्न होगा? [14]क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है? नियत समय में, अर्थात वसन्त ऋतु में, मैं तेरे पास फिर आऊंगा, और सारा के पुत्र उत्पन्न होगा। [15]सारा डर के मारे यह कह कर मुकर गई, कि मैं नहीं हंसी। उसने कहा,

नहीं; तू हंसी तो थी।

आयत 9. प्रकट रूप से, न तो अब्राहम ने और न ही सारा ने उन मेहमानों के साथ खाना खाया था। कुलपति वहां उनके पास खड़ा रहा एक मेज़बान की तरह भी और उनके बैरे की तरह भी। उन दिनों की संस्कृति और रिवाज़ के अनुसार सारा सामने नहीं आई पर वह पास ही थी; स्त्रियाँ आमतौर पर बाहरी या अजनबी पुरुषों से मिलना जुलना नहीं करती थीं[5] उसने कहा **"तेरी पत्नी सारा कहाँ है?"** इस प्रश्न से अब्राहम शायद चकित या हैरान हुआ होगा। कैसे यह तीन अजनबी उसका नाम जानते हैं? बाइबल कहीं भी इस बात को उजागर नहीं करती की अब्राहम ने उन्हें सारा से मिलवाया हो। इस घटना क्रम ने अवश्य ही उसे यह सोचने पर मजबूर किया होगा कि क्या यह लोग सामान्य से बढ़कर है। सारा के विषय में पूछे गए सवाल के उत्तर में उसने कहा **"वह तो तम्बू में है।"**

आयत 10. में जो मुख्य बोलने वाला या वक्ता नज़र आता है वह "प्रभु" (यहोवा) के रूप में पहचाना गया है, तब उसने कहा: **"उसने कहा मैं वसन्त ऋतु में निश्चय तेरे पास फिर आऊंगा; और तब तेरी पत्नी सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा।"** इसके पहले तक परमेश्वर ने अब्राहम को एक पुत्र देने की जो प्रतिज्ञा की थी वह अनिश्चित थी, जिसका अर्थ यह है कि कोई निश्चित समय नहीं बताया गया था की कब प्रतिज्ञा किया हुआ पुत्र जन्म लेगा। उन प्रकटीकरण के विपरीत इस बार परमेश्वर की घोषणा निश्चित थी: नियत समय में, अर्थात वसन्त ऋतु में, मैं तेरे पास फिर आऊंगा, כָּעֵת חַיָּה *(काइथखय्या)*। इस तरह का रूप 2 राजा 4:16, 17 में देखने को मिलता है, वहाँ भी ज़िक्र बसंत ऋतु का ही आया है "उसी समय जब दिन पूरे हुए"[6] यह भविष्यवाणी इस बात को नहीं दर्शाती है कि यहोवा का अब्राहम के पास वापस आना किस तरह से एक साल बाद सारा के इसहाक को गर्भ में धारण से जुड़ा है, परंतु 21:1 में कहता है यहोवा ने गर्भ धारण करने में सारा की सुधि ली।

सारा जो तम्बू के द्वार पर खड़ी यह बातें सुन रही थी, उसने भी यह भविष्यवाणी सुनी कि वह बसंत ऋतु में एक पुत्र को जन्म देगी। निस्संदेह वह ईश्वरीय दूत तंबू की तरफ़ अपनी पीठ किए हुए था, इसलिए उसे लगा कि शायद कोई यह बात नहीं जान पायेगा कि वह छिपकर उनकी बातें सुन रही है।

आयत 11. वर्णन करने वाला यहाँ पर पढ़ने वालों के मध्य एक और बात रख रहा है कि **अब्राहम और सारा** के लिए यह बात कितनी असंभव सी थी कि इस **बुढ़ापे की अवस्था** में वे बच्चा प्राप्त करेंगे (देखें 17:17)। बच्चे उत्पन्न करने की सारा की **उम्र निकल चुकी थी**; अर्थात वह अपने रजोनिवृत्ति से भी निकल चुकी थी।

आयत 12. इस कारण से, सारा अविश्वास करते हुए हँस पड़ी। फिर भी, उसका संदेह उसके पति जितना बड़ा प्रतीत नहीं हुआ, जो मुंह के बल और इस बात पर हंसा कि वे लोग माता पिता बन सकते हैं (17:17)। सो सारा मन में हंस कर कहने लगी, **"मैं तो बूढ़ी हूं, और मेरा पति भी बूढ़ा है, तो क्या मुझे यह**

सुख होगा?" सारा की प्रतिक्रिया अब्राहम से अधिक औपचारिक थी, परंतु उसे इस बात का एहसास था कि वे दोनों बच्चे उत्पन्न करने के लिए बहुत बूढ़े है। इतने सालों के कड़वे अनुभव का स्वाद चखने के बाद, वह कैसे अपने आप इस ख्याल से आनंदित होने की अनुमति देती कि उसे ऐसा सुख मिल सकता है।

आयत 13. सारा ने चुपके से अब्राहम से उन अजनबियों की बातें सुन ली थी, परंतु स्थिति में बदलाव तब आया जब उसने सारा को अपने में हँसते हुए सुन लिया। लेखक ने **प्रभु** (यहोवा) को यहाँ पर वक्ता या बोलने वाले के रूप में पहचाना है, और यह बात इसे स्पष्ट करती है कि वह कैसे सारा का नाम जानता था और कैसे वह यह भी जान गया कि उसने चुपके से क्या फुसफुसाया; वह इस विचार पर कि **वह बच्चे उत्पन्न कर सकती है**, अविश्वास से हंस पड़ी। इसलिए, प्रभु ने **अब्राहम** से पुछा, **"सारा क्यों हँसी?"**

आयत 14. परमेश्वर ने इस सवाल के बाद एक और सवाल किया - एक ऐसा प्रश्न जो कई सालों से कुलपति और उसकी पत्नी के सामने मुख्य या मौलिक प्रश्न के रूप में बना हुआ था (15:1-18:15): **"क्या यहोवा के लिए कोई काम कठिन है?"** निस्संदेह, यह एक आलंकारिक प्रश्न था जो इसी उत्तर की मांग करता था कि "नहीं" यहोवा के लिए कोई काम कठिन नहीं है (यिर्म. 32:17; मत्ती 19:26; लूका 1:37)। परमेश्वर ने पहले ही स्वयं को "सर्वशक्तिमान" के रूप में प्रकट कर दिया था (17:1)। परमेश्वर ने अब्राहम और सारा को यह विश्वास दिलाया कि वह अद्‌भुत और आश्चर्यजनक रूप से उसके जीवन को पुनरुज्जीवित कर सकता है और इस बुढ़ापे के अवस्था में भी उन्हें संतान दे सकता है। फिर परमेश्वर ने पूर्व में अपने द्वारा की गयी घोषणा को पुनः दोहराया: **"उसने कहा मैं** [वसन्त ऋतु में] **निश्चय तेरे पास फिर आऊंगा; और तब तेरी पत्नी सारा के एक पुत्र उत्पन्न होगा।"**

आयत 15. सारा ने अब तक यह जान लिया था वह मेहमान असल में स्वयं परमेश्वर था जो मनुष्य रूप में आया था, अन्यथा कौन यह जान सकता है कि उसने अपने आप से क्या कहा था? अचंभित होने के साथ-साथ, अपने मन का अविश्वास प्रकट हो जाने के कारण उसे डर और शर्मिंदगी महसूस हुई। इसलिए उसने इस बात से **इनकार** करते हुए कहा **"मैं नहीं हंसी।"** यह असत्य जो उसने कहा वह ठीक वैसा ही था जैसा उसके पति ने फिरौन के सामने अपने जीवन के डर के कारण कहा था (12:10-20)। जब उसने यह जाना की परमेश्वर उसके अविश्वास के बारे में जानता है, तो वह इस डर से भयभीत हो गई कि कहीं परमेश्वर उसे दंडित न करे; पर उसने अपने दोष को यह कह कर और बढ़ा लिया कि वह नहीं हंसी थी।

सारा को परमेश्वर द्वारा दिया गया उत्तर अनपेक्षित था। वह वैसा नहीं था जैसा सोच कर वह भयभीत हो रही थी। और न ही 17:17 में उसके पति द्वारा किए गए अविश्वास के द्वारा किसी तरह का ईश्वरीय क्रोध उन पर आया। इसके विपरीत परमेश्वर इस बात को समझता था कि दो ऐसे व्यक्तियों के लिए जिनका

शरीर बच्चे उत्पन्न करने के लिए मारा हुआ सा था, यह विश्वास करना बहुत ही कठिन है कि वे आज भी संतान प्राप्त कर सकते है। इसलिए परमेश्वर कोई कड़ा उत्तर दे कर सारा के हृदय को और व्याकुल नहीं किया। उसने एक दृढ़ पर अनुग्रह पूर्ण उत्तर दिया: **"नहीं; तू हंसी तो थी।"** अब्राहम और सारा के मेहमान उनके लिए एक सुसमाचार ले कर आये थे। इतने साल के इंतज़ार के बाद, परमेश्वर द्वारा की गयी प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय आ गया था; उन्हें एक वर्ष के अन्दर एक पुत्र प्राप्त होने वाला था। जाने से पहले उन लोगों ने अब्राहम को एक दुःखद समाचार भी दिया: सदोम और अमोरा, वह शहर जहाँ उसका भतीजा लूत निवास कर रहा था, इतना पाप और अधर्म से भर गया था की उसपर ईश्वरीय दंड आने ही वाला था।

प्रभु और दो दूतों के मध्य बातचीत (18:16-22)

16फिर वे पुरुष वहां से चल कर, सदोम की ओर ताकने लगे: और अब्राहम उन्हें विदा करने के लिये उनके संग संग चला। 17तब यहोवा ने कहा, यह जो मैं करता हूं सो क्या अब्राहम से छिपा रखूं? 18अब्राहम से तो निश्चय एक बड़ी और सामर्थी जाति उपजेगी, और पृथ्वी की सारी जातियां उसके द्वारा आशीष पाएंगी। 19क्योंकि मैं जानता हूं, कि वह अपने पुत्रों और परिवार को जो उसके पीछे रह जाएंगे आज्ञा देगा कि वे यहोवा के मार्ग में अटल बने रहें, और धर्म और न्याय करते रहें, इसलिये कि जो कुछ यहोवा ने अब्राहम के विषय में कहा है उसे पूरा करें। 20फिर यहोवा ने कहा सदोम और अमोरा की चिल्लाहट बढ़ गई है, और उनका पाप बहुत भारी हो गया है; 21इसलिये मैं उतरकर देखूंगा, कि उसकी जैसी चिल्लाहट मेरे कान तक पहुंची है, उन्होंने ठीक वैसा ही काम किया है कि नहीं: और न किया हो तो मैं उसे जान लूंगा। 22सो वे पुरुष वहां से मुड़ के सदोम की ओर जाने लगे: पर अब्राहम यहोवा के आगे खड़ा रह गया।

आयत 16. अब्राहम और सारा से भेंट करके उन तीनों मेहमानों का प्रथम उद्देश्य तो पूरा हो गया था, इसलिए वे आगे बढ़ने को तैयार थे। एक अच्छे मेज़बान की तरह अब्राहम कुछ दूर तक उनके साथ चला। वे लगभग 3 मील हेब्रोन के पूर्वी के तरफ चले थे, जहाँ से मृत्यु सागर 18 मील पूर्व की दूरी से नज़र आ रहा था। आलेख इस बात को दर्शाते है कि **उन पुरुषों ने ... आँख उठा कर सदोम को देखा**।

प्राचीन "सदोम" का ठीक-ठीक ठिकाना अज्ञात है, पर बहुत से लोग यह सोचते है की यह मृत्यु सागर के दक्षिण छोर पर स्थित था। मृत्यु सागर के दक्षिण पूर्व और दक्षिण पश्चिम पर और साथ ही साथ उत्तर और दक्षिण छोर तक खुदाई की गयी है। हालाँकि कुछ अवशेषों की खोज की गयी है, परंतु इस बात में कोई सर्व सम्मति नहीं है कि क्या इस में से कोई भी शहर लूत के निवास स्थान की तरफ स्थित रहा होगा। कुछ का यह मानना है कि सदोम के अवशेष समुद्र के

अन्दर समा गए, और बहुतों को यह विश्वास है कि शहर का अवशेष ज़मीन में दफन हो गया है, अब सिर्फ़ पुरातात्त्विक फावड़े के चलने का इंतज़ार है ताकि इसकी संरचना का पता चले।[7]

आयत 17. इस दृश्य में **परमेश्वर** अब्राहम के बारे में बातें करता है, पर उससे नहीं। लेख इस बात को उजागर नहीं करते कि परमेश्वर ने चुपचाप खुद से बातें कीं या सुना कर उन दो दूतों से जो उसके साथ थे; जो भी हो, अगर उसने दूसरी तरह से बातें की, तो इस तरह से बोली कि अब्राहम उसे सुन न सकें।

यहाँ परमेश्वर का सवाल यह था **"यह जो मैं करता हूं सो क्या अब्राहम से छिपा रखूं ...?"** बाइबल के बाद के इतिहास में, यह प्रश्न पुनः उठा, परंतु उस समय यह प्रतिज्ञा के रूप में न कि प्रश्न के रूप में। अमोस के द्वारा, यहोवा ने यह घोषणा की "इसी प्रकार से प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रकट किए कुछ भी न करेगा" (आमोस 3:7)। यह इस बात को दर्शाता है कि परमेश्वर ने उसको (जो 20:7 के अनुसार भविष्यवक्ता भी कहलाया) और उसके बाद आने वाले सभी भविष्यवक्ताओं को भी अपनी योजनाओं और जानकारियों को ज़ाहिर किया।

आयत 18. अब्राहम को अपनी योजनाओं के विषय बताने का प्रथम कारण उसका भविष्य था: **वह एक महान और सामर्थी राष्ट्र बनने** जा रहा था। यहाँ दिया कथन उनसे मेल खाता है जो 12:2; 13:16; 15:5; 17:4-6 में पाए जाते है; फिर भी, "सामर्थी" शब्द का समावेश 12:2 की मूल प्रतिज्ञा को दृढ करता है। कुलपति अब्राहम पर प्रकटीकरण का दूसरा महत्वपूर्ण आधार यह था **अब्राहम के द्वारा ही सारे राष्ट्र और पृथ्वी के लोग आशीषें पाएंगे**। हमने 14:13-24 में यह देख लिया है कि कैसे अब्राहम कसीस के लिए आशीष का कारण बनता है: सदोम के राजा और उसके लोग; लूत और उसका परिवार;तीन अमोरी भाई; और मल्किसेदेक, शालेम का राजा। पुनः 18:23-33 में, वह कुछ के लिए आशीष का कारण ठहरेगा जैसे लूत, जो दुष्ट नगरी सदोम में वास करता था। और उसने यह सब उन लोगों के बदले प्रार्थना करके किया।

आयत 19. तब परमेश्वर ने बताया कि क्यों अब्राहम का प्रभाव मनुष्यों और राष्ट्रों पर इतना महान और विश्वव्यापी होगा: **"मैंने उसे चुना है।"** इब्रानी लेख पूरी तरह से इस बात स्पष्ट करता है की "मैंने उसे जाना [יָדַע, *यादा*] है।" यहोवा अब्राहम को बहुत ही नजदीकी से जानता था। *"यादा"* का आधारभूत अर्थ है कोई बात या किसी को "जानना" भले ही वह कितना भी अल्पविकसित या विस्तार पूर्ण क्यों न हो। गहरा अर्थ का संबंध व्यक्तिगत ज्ञान से है, जैसे परमेश्वर और उसके लोगों के बीच का संबंध। ऐसा रिश्ता तभी संभव है जब लोग परमेश्वर के हृदय के साथ-साथ उसकी व्यवस्था को ही जानेंगे (नीति. 2:5; यशा. 11:2; 58:2; यिर्म. 22:16; होशे 4:1, 6; 6:6)। *"यादा"* के पिछले इस्तेमाल में यह पति और पत्नी के बीच अंतरंग ज्ञान के समरूप है और इसलिए यह उत्पत्ति में यौन संबंध के लिए सामान्य भाषा है (4:1, 17, 25; 19:8; 24:16; 38:26)।

कुछ अनुवाद जैसे (NASB; NIV; NRSV) *यादा* को इस लेख में "चुन हुआ" के रूप में अनुवाद किया है, भले ही वे अंत में लिखे नोट में यह कहते है कि आयत 19 में यह कहना कि इसका *यादा* का यथा शब्द अर्थ "जानना" है शायद श्रेष्ठ अनुवाद नहीं होगा क्योंकि इसका अकसर यह कह कर गलत अर्थ निकाला गया है कि परमेश्वर उद्धार के लिए अपनी स्वेच्छा और बेशर्त व्यक्तिविशेष का चुनाव करता है, जबकि वे लोग जिनका चुनाव नहीं किया गया उन पर बिना किसी चुनने के अधिकार के अनंत दोष लग जाता है।[8] बेशक 18:19 पर दिए गए विषय का, अब्राहम के व्यक्तिगत उद्धार के लिए ईश्वर द्वारा किए गए चुनाव से, कोई मतलब नहीं है। लेखक इस आयत पर ज़ोर दे रहा है कि परमेश्वर अब्राहम को करीब से जानता *(यादा)* था और उसके साथ व्यक्तिगत संबंध में इस योजना के साथ था कि वह उसके द्वारा ईश्वरीय कार्य या योजना को पूरा करेगा।[9]

परमेश्वर ने अब्राहम के लक्ष्य के प्रथम भाग की नींव रखी। वह अब्राहम और सारा को इस विश्वास की तरफ ले जाना चाहता था कि उसके साथ असंभव भी संभव होगा। अर्थात वे लोग इस बुढ़ापे की अवस्था में भी एक प्रतिज्ञा किए गए पुत्र की प्राप्ति करेंगे। शुरुवात में दोनों को विश्वास लाने में संघर्ष करना पड़ा है और इस तरह की बात सुनकर अविश्वास की दशा में वे हँसे भी, परंतु परमेश्वर उनके अविश्वास को चंगा करने के लिए निरंतर उनके साथ कार्य करता रहा। अंततः बाइबल हमें इस बात की जानकारी देती है कि उनका विश्वास "दृढ़ हुआ" (रोमियों 4:18-21); उन्होंने इस बात पर विश्वास किया परमेश्वर के कोई भी कार्य "बहुत कठिन नहीं है" (18:14)।

अब्राहम के लक्ष्य का दूसरा भाग एक उपदेशक या शिक्षक की भूमिका पर केंद्रित था। उसे अपने बाद और **बच्चों और सारे घराने को यह निर्देश देना था, कि वे धार्मिकता और न्याय को थाम कर परमेश्वर के मार्ग पर चलते रहे** (देखें यशा. 1:10-17; होशे 6:4-6; अमोस 5:21-24; मीका 6:6-8)। इसमें कोई अचम्भे की बात नहीं होनी चाहिए की, परमेश्वर चाहता है कि घर बुनियादी शिक्षा संस्थान होना चाहिए क्योंकि एक घर ही समाज का बुनियादी संस्थान है। माता पिता के लिए यह आवश्यक है कि वे आने वाली हर पीढ़ी को वह आत्मिक और नैतिक विरासत सौपें जो परमेश्वर के उन्होंने आरम्भ की थी (व्यव. 6:1-9; इफि. 6:1-4)। यह सुनने में अजीब प्रतीत होता है कि झूठे देवताओं के उस दुनिया में परमेश्वर ने इस बात पर पहले ज़ोर दिया की "धार्मिकता और न्याय के काम किए जाये" न कि इस बात पर बात कि सिर्फ़ "प्रभु के रूप में" उनकी आराधना हो। बाद वाली बात का अनुमान शायद परमेश्वर को पहले से हो क्योंकि अब्राहम को मूर्ति पूजा छोड़कर यहोवा की आराधना करना आरम्भ किए आधी शताब्दी का समय बीत चुका था।

परमेश्वर के कथन का अंतिम वाक्यांश इस बात को पूरी तरह स्पष्ट करता है कि बहुतों की सोच से विपरीत अब्राहम को की गयी यहोवा की प्रतिज्ञा में कुछ शर्तें भी शामिल थी। और वे सब कुलपति अब्राहम के विश्वास के द्वारा पूरी की

गई। अब्राहम ने "परमेश्वर की बात मानी" (देखें 22:15-18; 26:5; रोमियों 4:16)। **इस तरह की प्रतिक्रिया अत्यावश्यक थी ताकि परमेश्वर उस बात को पूरी कर सकें जो उसने अब्राहम से कहीं थी**। सारे संसार की जातियों (12:3) को आशीषित करने की परमेश्वर की योजना अब्राहम के द्वारा पूरी होनी थी। उसे, बदले में परमेश्वर की इच्छा को अपने परिवार पर प्रकट करना था। उसके बाद आने वाली पीढ़ियों को अपने परिवारों; और अंत में, अब्राहम का वंश - इस्राएल की संतान - एक वाहक के रूप में परमेश्वर की ज्ञान को समस्त पृथ्वी में प्रसारित करेंगे (निर्गमन 19:4-6; यशा. 42:6; 49:6)।

आयत 20. परमेश्वर ने अपने ही प्रश्न का उत्तर दिया। अगर परमेश्वर ने प्रथम बार ऐसे बोला कि अब्राहम उसे सुन न सका तो, निश्चित तौर से इस बार उसने इतना ऊँचा कहा कि अब्राहम के कानों तक यह बात पहुँच जाये। उसने कहा **"सदोम और अमोरा की चिल्लाहट बढ़ गई है, और उनका पाप बहुत भारी हो गया है।"** "चिल्लाहट" शब्द शायद उन लोगों के रोने और अनुनय की ओर संकेत कर रहा था जो अत्याचारी और उपद्रवी लोगों के हाथ से दुख उठा रहे थे और सताए जा रहे थे (देखें निर्गमन 2:23; 3:7, 9; व्यव. 26:7; न्यायियों 10:12; नहेम्य. 9:9; अय्यूब 34:28; भजन 9:12; नीति. 21:13)। बाद में, नबियों ने इस्राएल और यहूदा राज्यों द्वारा किए जा रहे सामाजिक अन्याय की तुलना प्राचीन सदोम और अमोरा से की है (यशा. 1:3, 4, 9, 10, 21-23; यहेज. 16:46-49; आमोस 4:1, 11)। नए नियम में कहीं भी इस बात का ज़िक्र नहीं है कि लूत ने सदोम के लोगों के पाप और अधर्म के विरोध में परमेश्वर से प्रार्थना की हो। जो भी हो, पतरस उनके जीवन के विषय वर्णन करता है कि वे भक्तिहीन, अशुद्ध चाल चलन वाले और अधर्म के काम करने वाले लोग थे; उसने यह भी कहा कि उनके ऐसे कार्य धर्मी लूत की आत्मा को प्रतिदिन पीड़ित करते थे (2 पतरस 2:6-8)।

आयत 21. "सदोम और अमोरा की चिल्लाहट" सुनने के बाद (18:20), **परमेश्वर ने स्वयं नीचे आने की ठान ली ... ताकि देखे कि क्या उन्होंने वैसे ही कार्य किए है जैसी चिल्लाहट यहोवा के सम्मुख बढ़ी थी** (देखें 4:10; 11:5, 7; 19:13)। उसने कहा **अगर नहीं**, वह मामले की सच्चाई जान लेगा। परमेश्वर चाहता था कि अब्राहम यह **जान** ले कि वह जल्दबाज़ी और झूठे प्रमाणों के आधार पर सदोम और अमोरा के नगरों पर कोई कार्य नहीं करेगा। बल्कि वह स्वयं सत्य को जानने का कार्य करने नीचे उतरेगा और जांचेगा की जैसी चिल्लाहट उसके कानों तक पड़ी है क्या वहां के पाप और अधर्म भी वैसे ही है। बेशक परमेश्वर के नीचे उतरने वाले इस कथन को यथाशब्द नहीं लिया जा सकता क्योंकि परमेश्वर मनुष्यों की भांति समय और स्थान में सीमित नहीं है (भजन 139:7-12)। वह हर समय देखता और जानता है कि मनुष्य क्या कर रहे है और किस तरह का जीवन जी रहे है (नीति. 15:3; यिर्मयाह 23:24; इब्रा. 4:13)।

आयत 22. इस समय वे **पुरुष [दूत] मुड़कर सदोम की तरफ चल पड़े**, जबकि **अब्राहम परमेश्वर के सम्मुख खड़ा था**। यहूदी रिवाज के अनुसार, यह हिस्सा उन अठारह आयतों के अंतर्गत आता है जो शास्त्रियों द्वारा इब्रानी बाइबल से निकाल दिया क्योंकि उनके अनुसार ये भाग अप्रासंगिक या बेमतलब है। उनका मानना है कि आयत के दूसरे भाग का सही अनुवाद यह है कि "*परमेश्वर अब्राहम* के सामने खड़ा रहा" (देखें NAB; NJB; TEV; NCV; CEV; NLT)।[10] फिर भी, इस आयत में शायद किसी भी तरह का कोई बदलाव नहीं किया गया है क्योंकि ऐसा ही कथन MT में 18:22 और 19:27 दोनों में पाया जाता है। बाद वाले भाग में (19:27) में यह लिखा है "भोर को अब्राहम उठ कर उस स्थान को गया, जहां वह यहोवा के सम्मुख खड़ा था।"

यह भाव "सम्मुख खड़े रहना" पुराने नियम में काफी सामान्य है। परमेश्वर के "सम्मुख खड़ा होने" का कई बार अर्थ उसकी आराधना करना (यिर्म. 7:10), उसकी उपस्थिति में प्रवेश करना (व्यव. 19:17; 29:14, 15), या उसकी सेवा करना (1 राजा 17:1; 18:15; 2 राजा 3:14; 5:16) भी होता है। यहाँ यह वाक्यांश कुछ अलग ढंग से, एक नबी की प्रार्थना की सेवकाई रूप में, प्रस्तुत किया गया है,।

बहुत सालों के बाद, परमेश्वर ने यिर्मयाह से कहा "यदि मूसा और शमूएल भी मेरे सामने खड़े होते, तौभी मेरा मन इन लोगों की ओर न फिरता" (यिर्म. 15:1)। इसके पश्चात, उसी अध्याय में, यिर्मयाह अकेले बैठ जाता है; वह क्रोधित और निराश है क्योंकि परमेश्वर के लोगों ने उसके वचन को अस्वीकार किया और उस पर सताव किया था। अपनी निराशा में डूब कर, उसने परमेश्वर की झूठी निंदा यह कह कर की "क्या तू सचमुच मेरे लिये धोखा देने वाली नदी और सूखने वाले जल के समान होगा" (यिर्म. 15:18), परंतु वास्तव में परमेश्वर ने इस नबी को धोखा नहीं दिया था। बल्कि, जब परमेश्वर ने उसे अपना प्रवक्ता होने की बुलाहट दी थी, उसी समय यह भी प्रकट कर दिया था कि लोग उसके प्रचार को ग्रहण नहीं करेंगे और उस से झगड़ेंगे। इन सभी विरोध के बावजूद, परमेश्वर ने अपने दास से प्रतिज्ञा की थी "तुझे छुड़ाने के लिये मैं तेरे साथ हूँ" (यिर्म. 1:8, 17-19), और उसने वास्तव में सभी संकट से उसे निकाला भी। इसलिए यहोवा ने यिर्मयाह को सलाह दी, "यदि तू फिरे, तो मैं फिर से तुझे अपने सामने खड़ा करूंगा" (यिर्मयाह 15:19)। अन्य शब्दों में, अगर वह अपने द्वारा परमेश्वर के विरोध में की गयी निंदा और दोष से मन फिराए, तो वह अपनी नबी की सेवकाई जारी रखते हुए परमेश्वर के भटके हुए लोगों के लिए प्रार्थना कर सकता है।

18:22 में अब्राहम का "परमेश्वर के सम्मुख" खड़ा होना वैसे ही था जैसे यहूदा के राज्य के अंत में एक नबी ने किया था। वह सेवकाई स्वभाव से रक्षात्मक थी, परंतु बिना किसी द्वेष, शिकायत और परमेश्वर पर झूठे दोष के, जैसा यिर्मयाह ने परमेश्वर के विरोध में कहा था। फिर भी, दोनों ही व्यक्तियों को

कठिन परिस्थिति में यहोवा के धार्मिक और न्यायपूर्ण कार्य के आश्वासन की ज़रूरत थी। परमेश्वर ने यिर्मयाह पर सताव तिरस्कार होने दिया, जबकि अब्राहम को इस बात की चिंता थी कहीं सदोम और अमोरा पर आने वाले विनाश के साथ लूत और उसका परिवार भी नाश न हो जाएं।

सदोम और अमोरा के लिए अब्राहम की प्रार्थना (18:23-33)

[23]तब अब्राहम उसके समीप जा कर कहने लगा, क्या सचमुच दुष्ट के संग धर्मी को भी नाश करेगा? [24]कदाचित उस नगर में पचास धर्मी हों: तो क्या तू सचमुच उस स्थान को नाश करेगा और उन पचास धर्मियों के कारण जो उस में हो न छोड़ेगा? [25]इस प्रकार का काम करना तुझ से दूर रहे कि दुष्ट के संग धर्मी को भी मार डाले और धर्मी और दुष्ट दोनों की एक ही दशा हो। यह तुझ से दूर रहे: क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे? [26]यहोवा ने कहा यदि मुझे सदोम में पचास धर्मी मिलें, तो उनके कारण उस सारे स्थान को छोड़ूंगा। [27]फिर अब्राहम ने कहा, हे प्रभु, सुन मैं तो मिट्टी और राख हूं; तौभी मैं ने इतनी ढिठाई की कि तुझ से बातें करूं। [28]कदाचित उन पचास धर्मियों में पांच घट जाए: तो क्या तू पांच ही के घटने के कारण उस सारे नगर का नाश करेगा? उसने कहा, यदि मुझे उस में पैंतालीस भी मिलें, तौभी उसका नाश न करूंगा। [29]फिर उसने उससे यह भी कहा, कदाचित वहां चालीस मिलें। उसने कहा, तो मैं चालीस के कारण भी ऐसा ने करूंगा। [30]फिर उसने कहा, हे प्रभु, क्रोध न कर, तो मैं कुछ और कहूं: कदाचित वहां तीस मिलें। उसने कहा यदि मुझे वहां तीस भी मिलें, तौभी ऐसा न करूंगा। [31]फिर उसने कहा, हे प्रभु, सुन, मैं ने इतनी ढिठाई तो की है कि तुझ से बातें करूं: कदाचित उस में बीस मिलें। उसने कहा, मैं बीस के कारण भी उसका नाश न करूंगा। [32]फिर उसने कहा, हे प्रभु, क्रोध न कर, मैं एक ही बार और कहूंगा: कदाचित उस में दस मिलें। उसने कहा, तो मैं दस के कारण भी उसका नाश न करूंगा। [33]जब यहोवा अब्राहम से बातें कर चुका, तब चला गया: और अब्राहम अपने घर को लौट गया।

आयतें 23, 25. मूसा ने **अब्राहम** को एक आदर्श मेज़बान के रूप में प्रस्तुत किया था, पर यहाँ पर उसका वर्णन उसने उसे एक दयालु भविष्यवक्ता के रूप में किया है (देखें 20:7) जो सदोम के अधर्मियों के लिए प्रार्थना करता है क्योंकि लूत और उसका परिवार वहां निवास करते है। कुलपति यह नहीं कह रहा था कि परमेश्वर न्याय न करे। और न ही अब्राहम परमेश्वर की धार्मिकता पर सवाल उठा रहा था। यहाँ प्रश्न कि **"क्या सचमुच दुष्ट के संग धर्मी को भी नाश करेगा?"** (18:23) उसकी इस चिंता को उजागर कर रहा है कि कहीं परमेश्वर दुष्टों के संग निर्दोष को भी नाश न कर दे। अब्राहम के विचार से, सच्चा न्याय यही मांग करता है कि परमेश्वर धर्मियों צַדִּיק *(साद्दीक)* और दुष्टों के मध्य पहचान करे, धर्मियों को बक्श दे और सिर्फ़ दुष्टों को ही दंड दे। अच्छे और बुरे के बीच अंतर ऐसा

विषय है जो कई बार बाइबल में पाया जाता है, और अंत में होने वाले न्याय का आधार भी है (प्रका. 20:11-15; 21:7, 8, 27; 22:11-15)।

अब्राहम शायद पहले से ही सदोम की दुष्टता के बारे में जानता था (13:13), चूँकि उसने कभी भी उनके पापों के प्रति परमेश्वर द्वारा किए गए मूल्यांकन को चुनौती नहीं दी। जो भी हो, सबसे पहले उसके मन में लूत और उसका परिवार थे जो सदोम में रह रहे थे। अब्राहम के भतीजे के बारे में हम अध्याय 19 से यह जान सकते है कि लूत धर्मियों की सूची में बहुत ऊपर स्थान नहीं रखता था। दूसरी ओर पतरस सदोम के निवासियों की दुष्टता की तुलना में उसकी गिनती धर्मी व्यक्तियों (δίκαιος, *डिकायोस*, जो *साद्दीक* के समान्तर है) में करता है (2 पतरस 2:6-8)। इस तरह का अंतर अकसर व्यवस्था, भविष्यवक्ता, और भजन संहिता की पुस्तकों में देखने को मिलता है। उदाहरण के "लिए यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है ... परन्तु दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा मेढ़ा करता है" (भजन 146:8, 9)।

सदोम के लिए अब्राहम के निवेदन में, उसने तीन बार इस बात पर ज़ोर डाला कि परमेश्वर धर्मियों और दुष्टों के साथ एक सामान बर्ताव करेगा, यह उसकी कल्पना से बाहर है। हर बार जब वह इस बात को दोहरा रहा था, उसने भाषा में परिवर्तन लाकर इस कार्य के प्रति अपने विरोध को कड़ा किया। प्रथम बार उसने पुछा, "क्या सचमुच दुष्ट के संग धर्मी को भी नाश करेगा?" (18:23)। यह प्रश्न परमेश्वर की तरफ से चूक की ओर संकेत करता है; इसके अनुसार शायद परमेश्वर अनजाने में अपना क्रोध दुष्टों के साथ-साथ धर्मियों पर भी भड़का रहा था।

दूसरी बार किया गया विरोध ज़्यादा प्रबल था; अब्राहम इस विचार से झिझक रहा था कि **परमेश्वर दुष्टों के संग धर्मियों को भी नाश करे ताकि धर्मी और दुष्ट दोनों की एक सी दशा हो** (18:25)। "मार डालने" מוּת *(मूथ)* का सीधा अर्थ "मृत्यु" है; और मृत्यु उनको दी जाती थी जो परमेश्वर की व्यवस्था के विरुद्ध किए गए अपराध में दोषी पाया जाता था (लैव्य. 20:2; गिनती 35:19, 21)। अब्राहम के प्रश्न का मुख्य आधार यही था कि वे लोग, जो धार्मिकता से जीते है वे नैतिक मूल्यों को जन्म देते है जिससे समाज बचा रहता है, वैसे लोग परमेश्वर के इस प्रकार के न्याय से भयभीत हो जायेंगे। उसके विचार के अनुसार, पवित्र बचे हुए दस धर्मी लोग भी, परमेश्वर के लिए बहुत से दुष्टों से ज़्यादा महत्वपूर्ण होंगे। जैसा की संसार की समस्त जाति अब्राहम के द्वारा आशीष पाने वाली थी, उसे लगा सदोम का अधर्म, उन कुछ चुनिन्दा धर्मी लोगों के कारण जो वह निवास करते थे, के द्वारा शायद बचा लिया जाए। अर्थात धर्मी स्थानापन्न रूप से दुष्ट के बदले जी सकेगा।

तीसरा विरोध जो अब्राहम ने खड़ा किया वह पहले ही जैसा था: उसके लिए यह सोचने कि परमेश्वर धर्मी और दुष्टों के संग एक समान बर्ताव करेगा। वह इस तरह के विचारों को मानने से इनकार कर रहा था, और उसका आवेश स्पष्ट रूप

से नज़र आता है जब वह कहता है **"यह तुझ से दूर रहे! क्या सारी पृथ्वी का न्यायी न्याय न करे?"** (18:25)। असल में, यह परमेश्वर से पुनर्विचार के लिये प्रार्थना थी कि क्या उसे धर्मियों को भी मारना चाहिए। बाइबल का एक मूल भूत सत्य यह है कि यहोवा, जिसने इस संसार को और जो कुछ इसमें है उसे बनाया है, वह धर्मी है और मनुष्यों के साथ अपने सभी प्रकार के बर्ताव में न्यायी भी। ये सत्य है, भले ही कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अन्याय पूर्ण काम किया है (व्यव. 32:4, 5; भजन 9:7-9; 96:10; 97:1, 2; रोमियों 2:5-11)।

आयतें 24, 26-33. अब्राहम ने परमेश्वर से प्रश्न किया, अगर वहां **पचास धर्मी** भी मिले तो क्या वह सदोम को बचा लेगा (18:24)। अपने दिए गए प्रस्ताव में जब परमेश्वर की सहमति अब्राहम को मिल गयी (18:26), तब उसने परमेश्वर पर थोड़ा और ज़ोर डाला और कहा कि अगर **पैंतालीस धर्मी** ही मिले तब भी क्या वह उनपर दंड की आज्ञा देगा (18:28)। एक बार फिर परमेश्वर ने अब्राहम के सुझाव को स्वीकार कर लिया; इस तरह अब्राहम ने दो बार गिनती को पाँच अंको से कम किया "पचास" से "पैंतालीस" तक और "पैंतालीस" से **"चालीस"** तक जाकर (18:29)।

कुलपति परमेश्वर के सामने ढीठ नज़र नहीं आना चाहता था या इस तरह से उनसे प्रश्न करके परमेश्वर का अपमान न करना चाहा; इसलिए वह इस बात को स्वीकार करता है कि वह **मिट्टी और राख** है (18:27)। यह शब्द मानवीय निर्बलता को दर्शाते है; उसका "मरना और राख में मिल जाना" निश्चित था (2:7; 3:19; अय्यूब 30:19; भजन 103:14)।[11] जब अब्राहम को परमेश्वर की तरफ से सकारात्मक उत्तर मिला तो उसकी हिम्मत कुछ और बढ़ गयी और उसने गिनती को तीन बार कम किया "चालीस" से तीस और **तीस से बीस** और फिर **दस** (18:30-32)। जैसे जैसे अब्राहम इस मामले को आगे बढ़ाता गया, वह अकड़ में नहीं था; उसके विपरीत क्षमा याचना करते हुए उसने दो बार परमेश्वर से विनती की, कि वह सदोम के धर्मियों पर दया करने के उसके आग्रह पर **क्रोधित** न हो (18:30, 32)।

अपने अंतिम निवेदन के पहले, अब्राहम ने शायद यह महसूस किया कि उसने परमेश्वर से बार-बार प्रश्न और निवेदन करने की सीमा को पार कर लिया है। इसलिए, उसने कहा अब वह सिर्फ़ एक बार और सदोम के विनाश के बारे में यहोवा से बात करेगा। तब उसने परमेश्वर से यह जानना चाहा कि यदि वहाँ मात्र दस धर्मी भी हुए तो क्या सदोम के बचने की संभावना है (18:32)। परमेश्वर ने अब्राहम के इन प्रश्नों को बर्दाश्त करते हुए न्याय करने में धीरज और धैर्य का परिचय दिया, जिसकी चर्चा बाद में पतरस ने भी की है। परमेश्वर की प्रथम सोच यह है कि क्योंकि वह नहीं चाहता, "कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले" (2 पतरस 3:9)। दूसरे शब्दों में, चूंकि "परमेश्वर प्रेम है" (1 यूहन्ना 4:8), इसलिए उसका पहला झुकाव दंड या नाश

करने की तरफ नहीं है बल्कि माफ करने और बचाने की तरफ है जब तक उसे अपनी पवित्रता के साथ समझौता न करना पड़े। इसका अर्थ ये है कि यहोवा को स्वयं को कुछ इस तरह से प्रस्तुत करना है की दुष्टों को यह कहने का मौका न मिले कि वह अत्यधिक या ज़रूरत से ज़्यादा कृपालु है जो पाप को देख कर आँख मूँद लेता जैसा उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। दोनों के बीच संवाद ख़त्म होने के बाद, **परमेश्वर वहाँ से चले गए और अब्राहम भी अपने स्थान को लौट आया** (18:33) - अर्थात "माम्रे के बांजो" में (18:1)।

अनुप्रयोग

विश्वास से पूर्ण व्यक्ति (अध्याय 18)

विश्वास से पूर्ण लोग अचानक आ जाने वाले मेहमानों के साथ अनुग्रह पूर्ण व्यवहार करते है (18:1-8)। अब्राहम जब कड़ी धूप में अपने तम्बू के द्वार पर बैठा था तब अचानक कुछ मेहमानों के आगमन ने उसे अचंभित कर दिया। वह खड़ा हुआ और उनका स्वागत करने के लिए दौड़ कर आगे बढ़ा, बिना यह जाने कि वे ईश्वरीय दूत थे। उनका स्वागत करने और उन्हें शानदार भोजन करने के द्वारा, उसने सभी विश्वासियों के लिए पहुनाई करने का उदाहरण प्रस्तुत किया।

इब्रानियों के लेखक के मन में ज़रूर अब्राहम का चरित्र आया होगा जब उसने मसीहियों को अपने भाइयों को प्रेम दर्शाने का आग्रह किया और यह भी कहा कि पहुनाई करना "न भूलना," "क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है" (इब्रा. 13:2)। प्रभु चाहता है की हम भी अब्राहम की तरह ऐसे ही पहुनाई का कार्य करें। हम जिस तरह से भूखे और प्यासे मेहमानों से बर्ताव करते है वह हमारे वास्तविक समर्पण या परमेश्वर के प्रति समर्पण की कमी को दर्शाता है। न्याय के दिन में विश्वासियों की परख इस बात से भी की जाएगी क्या हमने भूखों को खाना खिलाया, प्यासों को पानी पिलाया, और क्या पाहुनों को अपने घर आमंत्रित किया (मत्ती 25:35)। यीशु के अनुसार न्याय का वर्णन, राजा ने कहा "मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया" (मत्ती 25:40)।

विश्वास से पूर्ण लोगों को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा होना चाहिए, भले ही वह अविश्वसनीय प्रतीत क्यों न हो (18:9-15)। जब परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की, कि अगले वर्ष सारा को एक पुत्र होगा, तब वह अब्राहम की तरह (17:17) अविश्वास करते हुए हँसी। उनकी आयु के दो लोग - सारा नवासी वर्ष और अब्राहम निन्यानवे वर्ष में - प्राकृतिक ढंग से संतान उत्पन्न नहीं कर सकते थे। इस तरह के अविश्वास को देख कर यहोवा ने कहा "क्या परमेश्वर के लिए कोई भी काम कठिन है" (18:14) भले ही बच्चे पैदा करने के लिए उनका शरीर मरे हुए के सामान था, "निराशा में आशा रख कर" अंततः वे परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर विश्वास कर सके, "वह अपनी बात पूरी करने को सामर्थी है" (रोमियों 4:18-

24)। इसहाक के जन्म के साथ, परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर उनके विश्वास की पुष्टि की, भले ही आरम्भ में यह अविश्वसनीय लग रहा था।

पौलुस ने भी अविश्वास के मुद्दे की चर्चा की है, विशेषकर मरे हुओं के पुनरुत्थान के विषय में। उसके श्रोता कभी-कभी उसकी इस शिक्षा पर संदेह करते थे कि मसीह के दूसरे आगमन के साथ मुर्दे भी जी उठेंगे। पौलुस ने मसीह के पुनरुत्थान के पक्ष में ज़ोर देकर लिखा है विशेषकर उन अन्य जाति मसीहियों के लिए जिन्हें अनंत जीवन के लिए पुनरुत्थान के सिद्धांत को समझने में संघर्ष करना पद रहा था (देखें 1 कुरि. 15)।

आज भी अत्यधिक तर्क मन वाले, किन्हीं कारणों से शरीर के पुनरुत्थान को अस्वीकार करते है। और तो और कुछ मसीही भी इस सच्चाई को ग्रहण नहीं करते हैं; फिर भी आरंभिक कलीसिया ने शरीर के पुनरुत्थान की शिक्षा दी। बहुत प्रेरणादायक गवाहियों ने बहुत से विश्वासयोग्य प्रमाण प्रस्तुत किए इस पर भरोसा करने के लिए फिर भी प्रथम शताब्दी के बहुत से लोगों को यह बात अविश्वसनीय लगी।

पहले, परमेश्वर और यीशु दोनों ने यह प्रतिज्ञा की, कि मसीह मर कर पुनः जी उठेगा (यशा. 53:1-12; मत्ती 16:21; यूहन्ना 10:17, 18; प्रेरितों 2:22-24, 29-31)।

दूसरा, प्रेरित और पाँच सौ गवाहों ने, इस बाद की पुष्टि की, कि उन्होंने यीशु को सूली पर मृत्यु के बाद जीवित देखा था। कुछ लोगों ने तो उसे छूआ और संग भोजन भी किया (लूका 24:33-43; यूहन्ना 20:19, 20, 24-29; प्रेरितों 2:32-36; 9:1-6; 22:6-10; 1 कुरि. 15:1-8)।

तीसरा, यीशु के जी उठने की गवाही देने वालों को उसके जीवित होने की गवाही देने पर न धन, न प्रसिद्धि, और न ही किसी पद का लाभ होने वाला था। उसके विपरीत उनका सांसारिक नुकसान ही होना था, दोस्त, परिवार, संपत्ति और उनका अपना जीवन भी खतरे में था। बहुत को बड़ी कीमत भी चुकानी पड़ी क्योंकि उन्होंने ये गवाही देनी नहीं छोड़ी कि उन्होंने यीशु को मरने के बाद जीवित देखा है।

चौथा, यीशु का पुनरुत्थान हमारे पुनरुत्थान का वादा है और हमें भविष्य के लिए आशा देता है। और यह सुसमाचार है; बिना इसके, जैसा पौलुस कहता है, हम अभी भी पाप में है, हमारा विश्वास व्यर्थ है, और हमारा जीवन खोखला है (1 कुरि. 15:14-22)। आज भी संसार में बहुत से ऐसे लोग है जो शक करते है जिससे उन्हें कोई आशा नहीं मिलती। मसीहियों के लिए, मृत्यु का डंक नहीं रहा और जय ने उसे निगल लिया है क्योंकि मसीह मृतकों में से जी उठा है। हम पाप और मृत्यु पर उसकी जीत में सहभागी है, और "परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं" (रोमियों 8:37; ESV; देखें 1 कुरि. 15:54-57)।

विश्वास से पूर्ण लोग इस बात को समझते है कि दुष्टों पर परमेश्वर का दंड न्यायपूर्ण है (18:16-22)। यहोवा ने पुछा, "यह जो मैं करता हूं सो क्या अब्राहम से छिपा रखूं?" (18:17)। उसने अपनी योजना को अब्राहम पर प्रकट दो कारणों से किया: (1) अब्राहम से एक "सामर्थी जाती निकलने वाली थी," और पृथ्वी की सारी जातियां उसके द्वारा आशीष पाएंगी (18:18)। इसलिए, जब बड़ी संख्या में लोग (सदोम,अमोरा और यरदन की तराई के अन्य शहर; 19:24, 25) अपनी दुष्टता के कारण नाश होने पर थे, परमेश्वर ने कुलपति अब्राहम को इतने भारी ईश्वरीय कार्य के विषय स्पष्टीकरण दिया। (2) अब्राहम को "अपने बच्चों और परिवार को जो उसके पीछे रह जायेंगे धर्म और न्याय का काम करते हुए यहोवा में अटल बने" रहने की शिक्षा देनी थी ताकि "जो कुछ परमेश्वर ने अब्राहम के विषय में कहा था उसे पूरा करे" (18:19)। परमेश्वर द्वारा मनुष्यों से बाँधी गयी कोई भी वाचा बेशर्त नहीं होती; परमेश्वर विद्रोही लोगों पर अपनी आशीषें थोपता नहीं है। इसलिए अब्राहम के वंशजों को आशीषित करने के लिए परमेश्वर के लिए यह आवश्यक था कि वह उन्हें, "परमेश्वर के मार्ग पर चलने" धार्मिकता से जीने और प्रतिदिन के जीवन में न्याय से काम करने के, निर्देश दे। और यह उनके प्रतिज्ञा के देश की विरासत को पाने और उसके बाद भी आशीषित बने रहने के लिए एक शर्त थी (व्यव. 28:1, 2, 15, 16, 36, 37; 1 शमूएल 15:22, 23; आमोस 5:21-24; मीका 6:6-8)।

एक बड़ा कारण कि क्यों परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग धार्मिकता और न्याय के काम करें वह यह है कि वह स्वयं, स्वभाव से धर्मी, और न्यायी है। जब लोग जो यहोवा के स्वरूप में बने है वे अन्याय और अधर्म के कार्य करते हैं, तब ऐसी जीवन शैली उसके चरित्र को प्रकट करती है (लैव्य. 19:2, 13-18, 29-37; यशा. 1:16-23; होशे 4:1-4)। जब इस्राएली लोग मूर्तिपूजा में पड़ गए - जिसमें सभी प्रकार की दुष्टता, स्त्री और पुरुष के साथ वेश्यावृत्ति में संलग्न होना, और निर्दोष बालकों को बलि चढ़ाना भी शामिल था - जब अन्य जातियों के मध्य परमेश्वर के नाम के घोर निंदा और बदनामी हुई (लैव्य. 18:1-30; 2 राजा 23:1-27; 24:1-4; यशा. 52:5; यहेज. 36:20; रोमियों 2:24)।

परमेश्वर ने दोनों का वादा किया था निश्चित आशीषें और निश्चित दंड। उसकी यह इच्छा थी की ईश्वर के तरफ से मिली पीड़ा उनके जीवन और हृदय में परिवर्तन लाएगी। फिर भी उसने जितना उनको बुलाया (नबियों के द्वारा), वे उतना ही उससे दूर होते चले गए (होशे 11:1-7)। हृदय की दुखद कठोरता मन फिराव के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ती है। इस कारण यहूदा और इस्राएल का घराना अन्य देशों के दासत्व में चला गया और अपना मंदिर, राज्य, देश और स्वतंत्रता भी खो बैठा।

विश्वास से पूर्ण लोग परमेश्वर के साथ याचना करते हैं ताकि दुष्टों के साथ-साथ धर्मी भी नाश न हो जाए (18:23-33)। अब्राहम को यह विश्वास था कि सदोम और अमोरा के आस पास दुष्टों के साथ-साथ कुछ धर्मी लोग अब भी पाए

जाते है, और परमेश्वर के न्याय के तहत उनके ऊपर भी नाश हो जाने का खतरा है। इसलिए, वह इन नगरों के लिए परमेश्वर से विनती करता है, इस विश्वास के साथ कि परमेश्वर धार्मियों और दुष्टों के साथ एक समान व्यवहार नहीं करेगा।

यक़ीनन, अब्राहम ने जल प्रलय की कहानी सुनी होगी कि कैसे परमेश्वर ने नूह को "धार्मिकता का प्रचारक" बना कर प्रलय के पूर्व पाए जाने वाले लोगों को चेतावनी दी कि वे मन फिराए और जहाज़ में प्रवेश करें ताकि आने वाले विनाश से बच सकें (2 पतरस 2:5)। इस स्थिति में अब्राहम को इस बात का अंदाज़ा हो गया था कि इतना समय नहीं है की सामने खड़े विनाश की खबर उन दुष्ट नगरों तक पहुँचा सके। वह सिर्फ़ इतना ही कर सकता था कि लूत और उसके परिवार और शायद कुछ और धर्मियों के लिए यहोवा से विनती करें की परमेश्वर जो विनाश यरदन की तराई के नगरों पर लाने को था उससे उन्हें बचा ले।

अब्राहम इस बात को समझ गया था कि परमेश्वर ने कनान के अमोरियों को अब तक इसलिए नाश नहीं किया था क्योंकि उनका अधर्म "पूरा नहीं हुआ था" (15:16)। उसने शायद मेल्कीसेदेक, जो शालेम का राजा और याजक दोनों था, को भी स्मरण किया होगा, जो अन्य जातियों के देश में "सर्वोच्च परमेश्वर" का प्रतिनिधित्व करता था (14:18)। चूंकि यह अन्य जाति याजक स्पष्ट रूप से एक धर्मी राजा था (देखें इब्रा. 7:2) जिसने अपने लोगों पर एक पालक या रक्षात्मक के रूप में प्रभाव डाला था। अब्राहम को ऐसा लगा की परमेश्वर सदोम और अमोरा को क्षमा कर देंगे यदि वहाँ पर्याप्त धर्मी पाए गए तो। नैतिक अच्छाई, भले ही वहां कुछ ही क्यों न हो, दुष्ट समाज के बचाए जाने के पक्ष में गतिशील बल के साथ काम करने की क्षमता रखती है। परमेश्वर स्वयं धर्मी होने के नाते बुराई करने वालों पर अपना न्याय प्रकट करने के पहले इन बातों को अवश्य ध्यान में रखेगा।

पापियों के बदले परमेश्वर के सामने अब्राहम की विनती साथी मानवों के प्रति, जो परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए थे, उसकी चिन्ता और सहानुभूति को दर्शाती है। जिसमें, स्वयं को दूसरों से बढ़कर समझने का अहंकार और दूसरों को उनके पाप का दंड पाता देख आनंद महसूस करने का मज़ा, यह सारी बातें जाती रहती है। जैसा पौलुस ने बाद में कहा सच्चा "प्रेम कुकर्म से आनंदित नहीं होता परंतु सत्य से आनंदित होता है" (1 कुरि. 13:6)। इसमें अपने पापी होने की भी एक नम्र जागरूकता है जिसमें हम परमेश्वर के प्रति धन्यवादित बने रहते है कि उसने हमारे पापों के अनुसार हमसे व्यवहार नहीं किया! पापी होने के नाते, हम अगर कुछ कमा पाते तो वह सिर्फ़ मृत्यु ही है (रोमियों 6:23)। इसलिए, जब भी हम ईश्वरीय क्रोध के सामने खड़े होते है, हम सच्चाई से यह कह सकते है "हम दोषी तो हैं पर परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा मैं दोषमुक्त ठहरता हूँ।" यही वह रवैया है जिसने अब्राहम को प्रोत्साहित किया की वह सदोम और अमोरा के लोगों के बदले परमेश्वर से विनती।

दुष्टों के मध्य में धर्मी की दशा के बारे में अब्राहम की चिन्ता ने बाइबल में वर्णित परमेश्वर के महान लोगों के लिए प्रार्थना का एक आदर्श प्रस्तुत किया है। मूसा ने, जो एक उत्तम उदाहरण है, बाइबल के अनुसार समय-समय पर इस्राएल के लिए प्रार्थना की। यहोशू ने भी इसी का अनुसरण किया और कुछ ऐसा ही शमूएल, दाऊद, सुलैमान, और भविष्यवक्ता जैसे एलिय्याह, एलिशा, यशायाह, यिर्मयाह, और यहेजकेल ने भी किया।

नए नियम में, यीशु ने पहाड़ी उपदेश में सतानेवालों के लिये मध्यस्थता की प्रार्थना करने की आज्ञा दी थी (मत्ती 5:44)। जब वह निराश और त्यागे हुए लोगों की भीड़ के विषय में विचार कर रहा था, उसने चेलों से कहा की "खेत के स्वामी" से प्रार्थना करें ताकि "वह खेत काटने के लिए मज़दूर भेज दे" (मत्ती 9:36-38)। क्रूस की छाया में, उसने प्रार्थना की कि पतरस का विश्वास "खत्म न" हो (लूका 22:31, 32)। उसकी सबसे महान महायाजकीय प्रार्थना यह थी कि परमेश्वर उसके सभी चेलों को दुष्ट से बचाए, सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र करे, और उन्हें एक रहने के लिए आशीष दें, उन सब के साथ जो उसमें उनकी गवाही के कारण विश्वास करें (यूहन्ना 17:9-24)।

प्रेरित और पहली कलीसिया ने प्रार्थनाओं के साथ यीशु के उदाहरण का अनुसरण किया (प्रेरितों 1:14; 2:42; 4:23-31; 12:5-12; 13:1-3), यह जानते हुए की वह हमेशा अपने लोगों के लिए "मध्यस्थता करने के लिए जिया" (इब्रा. 7:25)। पौलुस मसीही प्रार्थना में पवित्रात्मा की मध्यस्थता और सहायता का वर्णन भी करता है (रोमियों 8:26-28)। भूमध्य संसार में परमेश्वर के लोगों के लिए उसकी पत्रियाँ भावनात्मक और समार्थशाली प्रार्थनाओं से भरी थी। प्रेरित अकसर उनके लिए भी प्रार्थना करता था, जिन्हें वह व्यक्तिगत तौर से जानता भी नहीं था (इफि. 1:15-23; 3:2, 14-21)। इसके साथ ही, वह मसीहियों को "सभी पवित्र जनों के लिए।" "हर समय आत्मा में प्रार्थना" करने के लिए प्रोत्साहित करता है, और वह उन्हें अपने लिए भी मध्यस्थता की प्रार्थना करने के लिए कहता है कि, "वह सुसमाचार के भेदों को हियाव के साथ बता सके" (इफि. 6:18, 19)। पौलुस ने मध्यस्थता की प्रार्थना के महत्त्व की इस प्रकार से जाना कि वह हर मसीही को सभी लोगों के लिए इस प्रार्थना को करने के लिए प्रेरित करता है, "राजाओं और सब ऊंचे पद वालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं" (1 तिमु. 2:2)।

समाप्ति नोट्स

[1]जॉन एच्. वाल्टन, विक्टर एच्. मल्तेव्स, और मार्क डब्लू. चावालास, *आईविपी बाइबिल बैकग्राउंड कमेंटरी: ओल्ड टेस्टामेंट* (दोन्नेर्स ग्रोव, आईअलअल: इंटरवारसिटी प्रेस, 2000), 50. [2]एडविन यामौची, "יָהוָה," *TWOT* में, 1:268. [3]सामरी स्त्री ने भी यीशु को "प्रभु" कहकर संबोधित किया था (κύριος, *कुरियोस),* जिसका अर्थ "महोदय" है (NASB; KJV; NIV; NRSV), जब उसने "जीवन का जल" देने का वायदा दिया (यूहन्ना 4:10, 11)। [4]प्राचीन समय के इब्री मापों के

आधुनिक बराबर ढूँढना मुश्किल है। "सआ" के विचार-विमर्श के लिए रोलैंड दे वौक्स, *एंशिएंट इजराइल*, वोल. 1, *सोशल इंस्टीट्यूशन्स* (न्यू यॉर्क: मैक्ग्रो-हिल बुक को., 1965), 201-3; और एडवर्ड ऍम. कुक, "वेइट्स एंड मैसर्स," इन *द इंटरनेशनल स्टैण्डर्ड बाइबिल इनसाइक्लोपीडिया*, रेव. एड., एड. गेओफ्फेरी डब्लू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मीच.: डब्लूऍम. बी. इइअरडी पब्लिशिंग को., 1988), 4:1050-51. [5]जॉन इ. हार्टले, *जेनेसिस*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेन्ट्री (पिबॉडी, मास.: हेंड्रिकसन पब्लिशर्स, 2000), 178. [6]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राईवर, एंड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हिब्रू एंड इंग्लिश लेक्सिकन आफ़ थे ओल्ड टेस्टामेंट* (ऑक्सफ़ोर्ड: क्लेरेंडॉन प्रेस, 1962), 312. [7]मार्टिन जे. मुल्डर, "सदोम एंड गमोरा," *द एंकर बाइबल डिक्शनरी*, एड. डेविड नोएल फ्रीडमैंन (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1992), 6:99-103. [8]देखें *द कॉन्फ़ेशन आफ़ फेथ आफ़ द प्रेसबीटेरियन चर्च इन द यूनाइटेड स्टेट्स* (रिचमंड, वी.ए.: जॉन नोक्स प्रेस, 1952), 25-30. *वेस्टमिनिस्टर कॉन्फ़ेशन आफ़ फेथ* से निकाली गयी शिक्षा, आज भी पूरे विश्व में बहुत से "रीफोर्मड चर्चेज़" द्वारा इस्तेमाल की जाती है। [9]जॉन एन. ओस्वाल्ट ने कहा था, "चूँकि परमेश्वर सावधानीपूर्वक कुछ ख़ास कार्य के लिए कुछ विशेष लोगों को चुनता है, और वह उन्हें त्याग भी सकता है यदि वे अपने उद्देश्य से चूकते है (1 शमूएल 2:27ff.)" (जॉन एन. ओस्वल्ट, "בָּהַר," *TWOT* में, 1:100)। [10]विक्टर पी. हमिल्टन, *द बुक आफ़ जेनेसिस: अध्याय 18-50*, द न्यू इंटरनेशनल कमेंट्री आन द ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिक.: डब्लू. एम् बी. एडमंस पब्लिशिंग को., 1995), 23.

[11]जॉन टी. विलिस, *जेनेसिस*, द लिविंग वर्ड कमेन्ट्री (ऑस्टिन, टेक्स.: स्वीट पब्लिशिंग को., 1979), 261-62.